Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 8 | ISSUE : 6 | JUNE 2022

'स्वातन्त्र्यवीरगाथा' महाकाव्य में चित्रित वीर सावरकर का राष्ट्र-प्रेम

डॉ. बलवन्तसिंह चौहान [1]

[1] आचार्य (संस्कृत), डॉ. बी. आर. ए. राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

ABSTRACT:

KEYWORDS:

महाराष्ट्र (सोलापुर) में जन्मे कवि केदार प्रणीत 'स्वातन्त्र्यवीरगाथा' नामक महाकाव्य एक पाण्डित्यपूर्ण श्रेष्ठ कृति है 'वीररस' प्रधान यह महाकाव्य बारह सर्गों में निबद्ध 2001 पद्यकुसुमों का स्तवक है। इसके नायक वीरोचित गुणान्वित वीर विनायक दामोदर सावरकर हैं। वीर सावरकर राष्ट्रोद्धारक, दिशानायक, हिन्दू संगठनवादी एवं भारत माता के श्रेष्ठतम सपूत थे। उनका देशप्रेम, त्याग और शौर्य युवकों के लिए एक पथ- प्रदर्शक पुस्तिका की भाँति है वीर सावरकर स्वातन्त्र्य संग्राम में क्रान्तिरथ के सफल सारथी, सफल इतिहास स्रष्टा और द्रष्टा थे। उन्होंने अपने लेखों, कविताओं और कृतियों के माध्यम से जनसामान्य में नवचेतना का संचार किया और क्रान्ति का मंत्र फूँककर अर्जुन की भाँति मोहग्रस्त भारतीय जनता को कर्तव्य पथ पर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

1 अक्टूबर, 1905 को वीर सावरकर ने पूना में एक सभा को सम्बोधित करते हुए भारतीयों से विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आह्वान किया। उनके नेतृत्व में भारतवर्ष में पूना में सर्वप्रथम विदेशी वस्तुओं को जलाया गया, परिणामस्वरूप सावरकर को फर्गुसन कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया।

तिलकानां सकाशाच्च चर्चा चैतन्यदायिका।
कृता विदेशिवस्त्राणां सामुदायिकहोलिका ।।[1]
दशरूप्यकदण्डं च प्राचार्यः कुरुते ततः।
वसतिगृहकक्षाच्च सत्वरं स बहिष्कृतः ।।[2]

तत्पश्चात् वीर सावरकर लन्दन चले गये और वहाँ 'फ्री इण्डिया सोसायटी' की स्थापना की। कुछ ही दिनों में सभा, समारोह, भाषण तथा चर्चा गोष्ठियों द्वारा संस्था क्रियान्वित हो गई। उन्होंने वहाँ रह रहे भारतीय नवयुवकों को 'अभिनव भारत सोसायटी' का सदस्य बना लिया अंगरेजों का गुप्तचर विभाग सावरकर की गतिविधियों पर नजर रखने लगा, किन्तु वीर सावरकर की बुद्धिमता और कर्तव्यनिष्ठा ने अनेक नवयुवकों की जीवन-शैली बदल दो और उन्हें मातृभूमि को स्वतन्त्रता हेतु प्रतिज्ञाबद्ध कर दिया। सावरकर की देश के प्रति कर्तव्यनिष्ठा को देखते हुए श्रीश्याम जी कृष्ण वर्मा ने उन्हें पेरिस जाने से पूर्व 'फ्री इण्डिया सोसायटी' का कार्यभार सौंप दिया। सन् 1907 में भारतीय क्रान्तिकारियों के प्रदर्शनों को दबाने के लिए स्वर्ण जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया तथा अंगरेजों द्वारा भारतीय क्रान्तिकारियों का मजाक उड़ाया गया।

ख्रिस्ताब्दे सप्तपञ्चाशे सङ्गरोऽभूच्च भारते।
स्वर्णमहोत्सवस्तस्य पर्वणः स्म व्यवस्यते।।[3]
प्रक्षुब्धा हिन्दवः सर्वे ज्ञात्वा गुप्तं तदिङ्गितम्।
आङ्ग्लैर्विद्रोह इत्येव नाटकेऽस्मिन् प्रचारितम् ।।[4]
निजशौर्य प्रसङ्गानां नाटयन्ति स्म नाटकम्।
अन्ते स्वविजयं वीक्ष्य ब्रिटिशा मेनिरे सुखम् ।।[5]

इस अपमानजनक दुष्प्रचार के विरोध में सावरकर ने 10 मई, 1907 का दिन स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्ण जयन्ती के रूप में मनाया। वीर सावरकर द्वारा लिखी गई पुस्तक '1857 का स्वातन्त्र्य समर का भारतीय युवकों पर गहरा प्रभाव पड़ा तथा इण्डिया हाउस में जनचेतना को जाग्रत करने के लिए सभाओं का आयोजन जोर पकड़ने लगा। कर्जन वायली ने लन्दन स्थित भारतीय क्रान्तिकारियों की गतिविधियों पर रोक लगा दी। इनकी हत्या के लिए वीर सावरकर ने मदनलाल धींगड़ा को प्रेरित किया। 1 जुलाई, 1909 को इम्पीरियल इंस्टीट्यूट के जहाँगीर हॉल के बाहर मदनलाल धींगड़ा ने कर्जन वायली की गोली मारकर हत्या कर दी।

वार्षिकश्च समारम्भो जहाङ्गीरनिकेतने।
घोषितश्चाङ्ग्ललोकानामानन्दोत्सवमेलने ।।[6]
खाद्यपेयादिभिस्तुष्टा यावजग्मुस्तु ते ततः।
धिङ्गरा स्वभुशुण्डीतो गोलिभिर्वायली हतः ।।[7]
ततो न्यायालयेनान्ते स देहान्तेन दण्डितः।
क्रान्तिकारकपक्षेऽसौ हुतात्मा प्रथमः स्मृतः ।।[8]

ब्रिटिश सरकार को दृढ़ विश्वास था कि वायली की हत्या के पीछे वीर सावरकर का हाथ है तथा इससे प्रेरणा लेकर ही धींगड़ा ने कर्जन वायली की हत्या की है। ब्रिटिश सरकार ने सावरकर को बन्दी बनाने की योजना बनायी तथा सावरकर पर पाँच अभियोग लगाये गये। 1. अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारत में षड्यंत्र रचना 2. ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करने का प्रयास 3. भारत और लन्दन में क्रान्तिकारी भाषण देना 4. जैक्सन और वायली की हत्या व अवैध शस्त्रों का निर्माण करना 5. लन्दन में शस्त्रों का इकट्ठा करना और भारत में निर्यात करना 13 मार्च, 1910 को लन्दन के विक्टोरिया स्टेशन पर सावरकर को फरार अपराधी अधिनियम के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया तथा ब्रिक्सटन बंदीगृह के कर्मचारियों का आदेश दिया गया।

यावद व्हिक्टोरियास्थाने पदं वीरो न्यवेशयत्।
तावदारक्षकस्तस्य स्वागतं समभावयत ।।[9]
आरोपपत्रकं तस्य तेन तत्रैव दर्शितम्।
जॅक्सनस्य वधे साह्यं राजद्रोहसमन्वितम् ।।[10]
वीरं कारागृहान्योक्तुं येतिरे सुहृदस्ततः।
परन्तु सर्वकारेण स यत्नो विफलीकृतः ।।[11]
ब्रिक्स्टने बन्दिशालायां वीरो बद्धो दृढं ततः।

निस्तारकममत्वासी कारायामेव वासितः ॥[12]

12 मई, 1919 को लन्दन में अदालत ने सावरकर पर भारत में मुकदमा चलाने की संस्तुति की गई तथा 29 जून, 1910 को ब्रिटिश सम्राट् के गृह सचिव ने सावरकर को भारत भेजने के आदेश दिये। 1 जुलाई, 1910 को वीर सावरकर को 'एस.एस. मोरिया' नामक जलपोत से भारत भेजा गया। यात्रा के दौरान सावरकर को विभिन्न यातनाएँ झेलनी पड़ी। उन्हें जहाल की जिस कोठरी में बंद किया गया, वहाँ पर सूर्य की किरणें भी प्रवेश नहीं होती थी।

तस्मिन्पोते तु वीरस्य कक्षोऽत्यन्तलघुस्तथा।

ऊष्माधिक्येन तं तत्र बबाधे च कफव्यथा।।[13]

अत्युष्णा प्रववुर्वाता नभसस्तीव्रमातपः।

हस्तौ च निगडे बद्धौ कफेनोरुरदूयत ॥[14]

धैर्यस्यायं महामेरुः साहसस्य हिमालयः।

दुःखभारात्तु तस्यापि कम्पितो दृढ़निश्चयः ॥[15]

यथावकाशमेव च पोतो भारतमागतः।

आरक्षकैश्च मुम्बय्यां वीरो नावोऽवतारितः ॥[16]

इस प्रकार राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत होकर उन्होंने अनेकविध कष्टों को हँसकर सहन कर लिया। उन्हें आरक्षकों द्वारा नासिक ले जाया गया और कारागार में बंद कर दिया। कुछ समय पश्चात् सावरकर को बम्बई के कारागार में ले जाया गया। बम्बई के हाईकोर्ट में उन पर मुकदमा चलाया गया। मुकदमें की सुनवाई के लिए विशेष अंगरेज जजों की नियुक्ति की गई। इन पर ब्रिटिश सम्राट् के विरुद्ध राजद्रोह का षड्यंत्र रचने तथा जैक्सन की हत्या हेतु धींगरा को उकसाना मुख्य आरोप थे।

अभियोगोविधिर्दीर्घश्चालितो विविध स्थले।

अन्ते च मुम्बई प्राप्तो विशेषे न्यायमण्डले ॥[17]

आरोपौ च स्वतन्त्रौ द्वौ राजद्रोहस्य कारणम्।

एकः षड्यन्त्रनिर्माणमन्यो जॅक्सनमारणम् ॥[18]

न्यायालय ने सावरकर को इण्डियन पेनल कोड की धारा 121 'अ' के अन्तर्गत दोषी बताया और आजीवन कारावास व सम्पत्ति जब्त करने का दण्ड दिया, परन्तु जज के उठते ही सम्पूर्ण वातावरण 'स्वातन्त्र्य लक्ष्मी की जय, भारत माता की जय, वन्देमातरम्' के नारों से गूँज उठा।

प्रत्यक्षानि प्रमाणानि नासन् सर्वप्रयत्नतः।

अतो न मृत्युपाशेन स कथञ्चन दण्डितः ॥[19]

तथापि दण्ड आजन्म कारावासस्य घोषितः।

सर्वस्वमधिहर्तव्यं स्थावरं जङ्गमं ततः ॥[20]

दण्डानुघुष्य चोत्तिष्ठन् यावन्यायाधिप अथ।

सर्वैः स्वातन्त्र्यलक्ष्मी की जयेत्युच्चैरघुष्यत् ॥[21]

इतिहास में दो आजन्म कारावासों की सजा सुनने के पश्चात् भी वीर सावरकर हताश नहीं हुए, बल्कि उन्होंने कहा 'त्याग और बलिदान द्वारा ही मेरी मातृभूमि को मुक्ति प्राप्त होगी। मैं इस कठोर दण्ड को बिना किसी द्वेष के भुगतने को तैयार हूँ क्योंकि केवल त्याग और बलिदान से ही मातृभूमि निश्चित रूप से स्वतन्त्रता की ओर अग्रसर हो सकती है। धन्य है ऐसी माताएँ, जिन्होंने ऐसे वीर सपूतों को मातृभूमि की वेदी पर चढ़ने के लिए जन्म दिया है।

इतिहासे द्विराजन्मकारावासस्य दण्डनम्।

पृथिव्यां श्रूयते नैव धिक्तद् ब्रिटिशशासनम् ॥[22]

अन्यः कोऽपि श्रुते दण्डेऽमूर्च्छिष्यद् हन्त तत्क्षणे।

वज्रमूर्तिस्त्वसौ नैव विचचाल निजासने ॥[23]

समुत्थाय पीठाग्रतः क्रान्तिवीरः।

स्वमुष्टिं विधुन्वन् वबाभे गंभीरः ॥[24]

'प्रणीतो मया क्रान्तिमार्गः स्वदेशे।

ममैव अमस्तं सुगम्यं करिष्ये।

प्रियां मातृभूमिं जयं प्रापयामि।

परं शाश्वते श्रेयसि श्रद्दधामि ॥[25]

धन्यः स क्रान्तिपन्थीयो देशभक्तो दृढव्रतः।

शपथे यस्य वीराय मृत्युदण्डो सुनिश्चतः ॥[26]

वीर सावरकर को डोंगर जेल में उनकी पत्नी मिलने आयी। उन्होंने पति को कैदी के कपड़े और पाँवों में बेड़ियाँ पहनी हुई देखी तो उनके नेत्रों से आँसू टपकने लगे। वीर सावरकर ने पत्नी को सान्त्वना देते हुए कहा कि संकट के समय धैर्य से काम लेना ही मनुष्यता का प्रमाण है। धैर्य से संकटों का सामना करना ही जीवन है।

बन्दिवासांस्यधार्यन्त वीरेण डोंगरीगृहे।

हस्तौ पादौ च सम्बद्धा निगडे बहुदुस्सहे ॥ [27]

अस्यां स्थितौ तु सम्प्राप्ता कान्ता दर्शनकाङ्क्षिणी।

पतिदेवं तथा दृष्ट्वा मूर्च्छितेव सुवासिनी ॥[28]

मा शुचो यमुने कान्ते धैर्यं धारय चेतसि।

देशभक्तस्य पत्नी त्वं नैव शोचितुमर्हसि ॥[29]

हुत्वैव निजसंसारं देशकार्यं प्रगच्छति।

अस्मत्त्यागेन देशस्य भाग्यं श्वो जागरिष्यति ॥ [30]

वीर सावरकर को कुछ दिनों के बाद भायखला जेल से ठाणे की जेल भेज दिया गया। फिर 27 जून, 1911 के दिन सावरकर को अण्डमान की जेल में भेजने के लिए 'महाराजा' जलपोत पर सवार कर दिया गया। सावरकर को लोहे की मोटी छड़ों से बने पिंजरानुमा जेल में ठूंस दिया गया। श्वास रोग से पीड़ित सावरकर ने हँसकर भी कष्टों को सहन किया। 4 जुलाई, 1911 के दिन 'महाराज' जलपोत अण्डमान द्वीप पहुँचा।

अन्दमानं महाराजा नाम पोतोऽथ निर्गतः।

तस्मिन्सर्वोऽपि सम्बद्धो बन्दिस्तोमो निवेशितः ॥[31]

वायुमानं च सर्वत्र ज्वर - रोग प्रवर्धकम्।

तत्र कारागृहं भव्यं विस्तीर्णं भीतिदायकम् ॥[32]

नाम सेल्युलरं जेलं विख्यातं सर्वतोमुखम्।

तुङ्गभित्तीभिराकीर्णं त्रिकोष्ठं बहुकक्षकम् ॥[33]

भारतीयों में क्रान्ति की अलख जगाने के लिए उन्होंने जेल में वीररस प्रधान कविताएँ लिखनी प्रारम्भ की। उन्होंने जेल की कोठरी की दीवारों को कागज के स्थान पर प्रयोग किया। नुकीले पत्थरों को अपनी कलम बना लिया। 'कमला' और 'गोमान्तः ' की रचना उन्होंने इसी जेल में रहकर की।

विरच्य कवितापङ्कितं भूयो भूयो स्म पठ्यते।

सम्यक्कृत्वा च कण्ठस्थां स्मृतिकोशे निधीयते ॥[34]

एकान्तवासदण्डोऽपि वरदानममन्यत।

'कमला' नामकं वीरः खण्डकाव्यमसूयत ॥[35]

सुधाक्ता धवला भित्ती कर्गलं नाम योजिता।

कण्टकस्यैव कोट्या च लेखनी तस्य कल्पिता ॥[36]

एवं नवशतप्राया रचितास्तेन पंक्तयः।

धन्यैव या कवित्वोर्मिर्धन्याश्च नवयुक्तयः ॥[37]

अण्डमान की जेल में उन्हें अमानुषिक यातनाएँ दी गई। उन्हें कोल्हू में बैल की तरह जुतकर तेल पैरने का कार्य दिया गया। तेल कम पैरने पर आवश्यकतानुसार भोजन तक नहीं दिया गया। जेल में नारियल का छिलका कूटने और रस्सी बँटने का कार्य भी करवाया गया। धन्य हैं ऐसे वीर सपूत, जिन्होंने देश की मुक्ति के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया।

एकान्तवासतो वीरोऽयुज्यत श्रमपर्वणि।

नारिकेलत्वचश्छित्त्वा तन्तुनिर्माणकर्मणि ।।[38]

ततः कष्टकरं 'कोलु' युज्यते स्म स दारुणम् ।

तैलनिष्पीडने यन्त्रे हस्ताभ्यां चक्रचालनम् ।।[39]

वृषवत्पशुना यच्च कर्म ग्रामेषु कार्यते ।

हन्त तत्किन्तु कारायां मनुष्येणैव पार्यते ।।[40]

वीरस्तद् भ्रामयँश्चक्रं भूयो भूयः स्म मूर्च्छति ।

दोदूयते च सर्वाङ्गं क्षीणशक्तोऽवसीदति ।।[41]

परन्तु वीर सावरकर एक चट्टान की तरह देशभक्ति में डटे रहे और जेल में भी क्रान्तिकारी गतिविधियों को जारी रखा कविताओं के माध्यम से देश-प्रेम का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने अपने विचारों द्वारा अन्य कैदियों का भी मनोबल बढ़ाया 10 वर्षों तक अण्डमान में कठोर यातनाओं, मानसिक उत्पीड़न, अपौष्टिक आहार, प्रतिकूल जलवायु, नीरस तथा उत्साहहीन जीवन व्यतीत करने के उपरान्त 2 मई, 1921 को सावरकर बन्धुओं को उसी 'महाराज' जलपोत से भारत लाया गया यात्रा के पाँच दिन बाद जब सावरकर ने यह सुना कि भारत तट आ गया है, तो उनकी खुशी की कोई सीमा नहीं रही। दोनों भाइयों ने हाथ जोड़कर भारत माता को प्रणाम करते हुए 'वन्देमातरम्' का नारा लगाया गया। अण्डमान जेल से उन्हें भारत लाकर अलीपुर जेल में बंद कर दिया गया तथा बड़े भाई गणेश सावरकर को बीजापुर की जेल में भेज दिया गया। वहाँ से वीर सावरकर को रत्नागिरि जेल भेजा गया।

सावर्करौ तदा नीता अन्दमानादलीपुरम् ।

हिन्दुस्थानभुवं दृष्ट्वा मानसं हर्षनिर्भरम् ।।[42]

भूमौ पूर्वं पदस्पर्शाद् दधौ वीरौ निजं करम् ।

धूलिं चन्दनवद् भालेऽलिम्पद् भक्तिपुरस्सरम् ।।[43]

शासनं प्राहिणोदादौ रत्नागिरीं विनायकम् ।

विजापुरं गणेशः स्म नीयते हेतुपूर्वकम् ।।[44]

वीर सावरकर रत्नागिरि जेल में अपने समय के क्रांतिकारी विचार और राष्ट्रप्रेम से ओट-प्रोत साहित्य विद्वान में श्लोक करने लगे। उन्होंने रत्नागिरी में युवात्व, हिंदू-पद-पदशाही, उ:शाप, संयस्त खड्ग, मोपलों का विद्रोह आदि कृतियों की रचना की।

कर्गलानि तदा लब्ध्वा लिखितं दिव्यपुस्तकम् ।

विमृश्य सर्वतत्त्वानि ' हिन्दुत्वं' नाम मौलिकम् ।।[45]

पुस्तकं लिखितं 'माझी जन्मठेपे' ति दुर्धरम् ।

आक्षिप्तं सर्वकारेण नोपलब्धमनन्तरम् ।।[46]

हिन्दुराज्यं प्रकुर्वाणाः शिवाजी पेशवास्तथा ।

'हिन्दुपदपातशाही' ग्रंथे ग्रथिता तेन सा कथा ।।[47]

'मोपालानां च विद्रोहं' सत्स्वरूपं निवेदितम् ।

हिन्दूनामेव हत्याभिः पर्व तद् रक्तलाञ्छितम् ।।[48]

6 जनवरी, 1924 के दिन वीर सावरकर को सशर्त यरवदा जेल से मुक्त कर दिया। उन्हें भारत सरकार की अनुमति के बिना 5 वर्ष तक किसी भी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं लेने, रत्नागिरि में ही निवास करने तथा भारत सरकार की अनुमति के बिना जनपद की सीमा से बाहर नहीं जाने हेतु पाबन्द किया गया।

एवं समापितस्तस्य कारावासो भयङ्करः ।

स्थानबद्धोऽपि सन्मान्यो गृहस्थ किल नागरः ।।[49]

उत्सृज्य बन्दिनो वेषं दधौ वासः कुटुम्बिनः ।

स्वजनान्मिलितुं मुक्तः सामान्यजनवत् पुनः।।[50]

श्री जमनादास मेहता ने वीर सावरकर की मुक्ति हेतु हस्ताक्षर अभियान चलाया। आखिरकार 10 मई, 1937 को उन्हें स्थानबद्धता से मुक्त कर दिया गया और उन पर लगे समस्त प्रतिबन्ध हटा दिये गए।

सावरकर एवं खलु निर्मुक्तः सर्वबन्धनात्पारम्।

सममन्यन्त च पौरा निजनेतारं तदा ससत्कारम् ।।[51]

सन् 1908 के पश्चात् प्रथम बार बम्बई के दादर स्टेशन पर तीनों क्रान्तिकारी भाइयों का मिलन हुआ। राजगोपालाचार्य आदि राष्ट्रीय नेताओं ने सावरकर की रिहाई को वीरता, साहस, देशभक्ति व धैर्य की विजय बतलाया 30 दिसम्बर, 1937 को कर्णावती (अहमदाबाद) में अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के 19वें अधिवेशन में वीर सावरकर को अध्यक्ष चुना गया। सावरकर ने प्रथम बार सार्वजनिक मंच से 'हिन्दू' शब्द को परिभाषित करते हुए कहा 'सिन्धु से लेकर' समुद्र तक फैली इस भारतभूमि को जो अपने पितृ-भूमि, पुण्य भूमि मानता है, वही हिन्दू है।' हिन्दू देशभक्त राष्ट्र देशभक्त का पर्यायवाची है हिन्दू राष्ट्र की स्वतन्त्रता भारत राष्ट्र की स्वतन्त्रता है। हम सबको मिलकर "भारत माता को बन्धनमुक्त करना है। सावरकर ने कहा कि 'जब तक मेरे शरीर में रक्त की एक बूँद भी शेष है। मैं अपने को हिन्दू कहूँगा और हिन्दुत्व के लिए लड़ता रहूँगा ।' इस प्रकार सावरकर ने समस्त बागडोर अपने हाथ में लेकर उसमें प्राण फूँक दिये।

प्रबलेन प्रचारेण प्रजाः प्रायः प्रभाविताः ।

देशे हिन्दुसभायां च भक्तिभावाः प्रवर्धिताः ।।[52]

अध्यक्षोघोषितो वीरोऽहमदाबादमेलने ।

पुराणी शिथिला संस्था सञ्जाता सुदृढ़ा जने ।।[53]

आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता यस्या भारतभूमिका ।

पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः ।।[54]

15 अप्रैल, 1938 को महाराष्ट्र में हुए साहित्य सम्मेलन में वीर सावरकर ने सभा की अध्यक्षता करते हुए अपनी ओजस्वी वाणी का उद्गार इस प्रकार किया।

वीरो दध्मौ तदाह्वानं कविलेखकयोः स्तरे ।

भञ्जन्तु लेखनीकार्यं भुशुण्ड्यो गृहणतां करे ।।[55]

साहित्यस्य ह्यभावेन देशौ नैव दरिद्रयते ।

क्षात्रवृत्तिं विना किन्तु विनाशः परिदृश्यते ।।[56]

शृङ्गारलोलुपैः काव्यैर्वीरवृत्तिर्निगल्यते ।

वीरवृत्या अभावे तु दास्यमुक्तिर्न लभ्यते ।।[57]

वीर सावरकर ने वर्षभर तक अनेक स्थानों का दौरा किया और 'हिन्दुओं के सैनिकीकरण' पर बल दिया। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस सावरकर द्वारा दिये गये 'हिन्दुओं के सैनिकीकरण' प्रस्ताव से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने 22 जून, 1940 को बम्बई में सावरकर से भेंट की सावरकर ने नेताजी को जर्मनी और इटली में जाकर फँसे हुए भारतीय सैनिकों का मार्गदर्शन कर सम्पूर्ण भारत की स्वतन्त्रता की घोषणा करने की सलाह दी। उन्हीं से प्रेरित होकर बोस ने आजाद हिन्द फौज' का गठन किया।

सुभाषचन्द्रबोसश्च वीरं मिलितवान् स्वयम् ।

एकान्तेऽमन्त्रयेतां तौ भाविकार्यस्य निश्चयम् ।।[58]

सैनिकस्वेदसेकेन नैव साम्राज्यपोषणम्।

स्वातन्त्र्यं तु स्वदेशस्य लक्ष्ममुद्दिश्य वर्तनम् ।।[59]

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् गाँधीजी ने साम्प्रदायिक सद्भाव हेतु 12 जनवरी को अनशन करने की घोषणा की हिन्दू संगठनवादियों का मत था कि गाँधीजी हिन्दू हितों की हत्या करके नवनिर्मित राष्ट्र पाकिस्तान की उन्नति के लिए आतुर हैं। अतः हिन्दू सभा के सदस्य नाथूराम गोडसे ने 30 जनवरी, 1948 को प्रार्थना सभा में जाते हुए अहिंसा के पुजारी गाँधी को गोली मार दी, जिससे उनका प्राणान्त हो गया। नाथूराम गोडसे द्वारा संचालित दैनिक 'हिन्दू राष्ट्र' सावरकर के विचारों का प्रतिनिधित्व करती थी। अखबारों में यह खबर छपी थी कि सावरकर ने ही गोडसे को प्रेरणा दी थी, फलस्वरूप सावरकर जी को 5 फरवरी, 1948 को गिरफ्तार कर आर्थर रोड बन्दीगृह में भेज दिया गया।

सभायां गान्धिनं गोल्यो भुशुण्ड्या क्षिप्तवान् स्वयम् ।

तत्रैव निगृहीतोऽसौ नीत आरक्षकालयम् ।।[60]

तावदारक्षका याताः स्थितिर्हि पर्यवर्तत ।

हन्त शिष्यापराधेन वीर एव न्यगृह्यत ।।[61]

10 फरवरी, 1949 को विशेष न्यायाधीश आत्माचरण ने सावरकर को निरपराध घोषित कर कारावास से मुक्त करने के आदेश दे दिये। सावरकर ने भविष्यवाणी की थी कि पाकिस्तान के जन्म से समस्याएँ सुलझने की अपेक्षा उलझ जायेंगी तथा इस महाद्वीप में नये संघर्ष का सूत्रपात होगा। भारत-पाक समस्याओं के समाधान हेतु अप्रैल के प्रथम सप्ताह में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली खान ने वीर सावरकर के वक्तव्यों की निन्दा की। उन पर आरोप लगाये गये कि उन्होंने अपने भाषणों में हिन्दुओं को मुसलमानों के विरुद्ध भड़काया । इसलिए 4 अप्रैल, 1950 को वीर सावरकर को पुनः बम्बई से गिरफ्तार कर बेलगाम जिला बन्दीगृह में ले जाया गया तथा 13 जुलाई, 1950 को उन्हें इस शर्त पर मुक्त कर दिया कि वे एक साल तक राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं लेंगे तथा बम्बई स्थित अपने निवास पर ही रहेंगे। जेल से छुटने के पश्चात् सावरकर ने हिन्दू महासभा की प्राथमिक सदस्यता से भी त्याग-पत्र दे दिया ।

पाकिस्तानेन सार्धं च नेहरुः सन्धिमैहत ।

लियाकतमलीखानं प्रस्तावं चान्वरुध्यत ।।[62]

तयोर्मध्ये हि मन्त्रण्यां विक्षेपो न भवेदिति ।

भीत्यैव नेहरुः सर्वान् हिन्दुनेतॄन् स्म दाम्यति ।।[63]

मन्त्रणा भविता दिल्लयां वासो वीरस्य दादरे ।

बेलग्रामे तु वीरोऽसौ स्थापितो बन्दिमन्दिरे ।।[64]

वीरपुत्रश्च विश्वासौ विदधौ न्याययाचिकाम् ।

अन्ते मुक्तस्तदा वीर आयातो निजभूमिकाम् ।।[65]

राजकारणवर्जत्वं पणस्तस्मिन्निवेशितः ।

हिन्दुसभासदस्यत्वं स मुमोच हि मूलतः ।।[66]

10 मई से 12 मई, 1952 को 1857 से 1947 तक के शहीदों को राष्ट्रीय श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु तीन दिवसीय सम्मेलन पूना में आयोजित किया गया, जिसमें वीर सावरकर ने जनता को निस्स्वार्थ देश की सेवा करने का सन्देश दिया। उन्होंने भारतीयों को यह भी याद दिलाया कि इतनी विपत्तियों के पश्चात् हमें जो आजादी मिली है, उसे व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिये जिस प्रकार क्रान्तिकारियों ने अपने रक्त की एक-एक बूँद देकर आजादी प्राप्त की है, उससे हमें शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये। हमें देश की सैनिक शक्ति को बढ़ाना चाहिये। देश की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रखना और इसे समृद्धि के शिखर तक पहुँचाना हम सब लोगों का कर्तव्य है ।

तदा स आदिशत्सर्वान् बान्धवान्सहकारिणः ।

त्यजेयुर्मनसा सर्वे विद्रोहीं वृत्तिमात्मनः ।।[67]

त्याज्यं गान्धिप्रणीतं च शौर्यं निर्बन्धभञ्जने ।

पाल्याः सदैव निर्बन्धा लोकतन्त्रस्य जीवने ।।[68]

वीरो विदेश मुस्लिमा विश्वासार्हा कदापि न ।

यथार्था भारतीयास्ते न भवेयुः कदाचन ।।[69]

अब सावरकर जी का स्वास्थ्य निरन्तर गिरता जा रहा था। उनके शुभ चिन्तकों ने उनके सम्मान में 24 दिसम्बर, 1960 के दिन को 'मृत्युञ्जयी दिवस' के रूप में घोषित किया। वीर सावरकर ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैंने सम्पूर्ण जीवन ही भारत माता की मुक्ति के लिए संघर्ष किया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति का आनन्द ऐसा है, जिसकी अभिव्यक्ति शब्दों में नहीं की जा सकती है। मेरी यह कामना है कि भारत माता की इस स्वतन्त्रता को कायम रखा जावे ।

चतुर्थ्यां पञ्चविंशत्यां तच्छरीरमजीर्यत ।

मृत्युञ्जयदिनं लोकैस्तस्य तादृक्कल्प्यत ।।[70]

तस्य मुक्तिदिनं नाम मृत्युञ्जयदिनं तदा ।

तस्मात्प्रचण्ड उत्साहेऽभ्यनन्दस्तं जना मुदा ।।[71]

8 नवम्बर, 1963 को उनकी पत्नी यमुना का देहावसान हो गया। वे इस पीड़ा को सहन नहीं कर सके और उन्होंने 3 फरवरी, 1966 को भोजन त्याग दिया। अन्तिम समय में उनके शब्द थे 'मैं अपने गाँव जा रहा हूँ। सभी मेरा राम-राम स्वीकार करें।' इन शब्दों के उच्चारण के पश्चात् 26 फरवरी, 1966 को 83 वर्ष की दीर्घायु में उनकी दिव्यात्मा परमात्मा में लीन हो गई।

विरोधे चापि सर्वेषां तत्याजान्नं स पूर्णतः ।

दम्भाचारो न गान्धीवत् सन्थारैव तु वस्तुतः।।[72]

तुकोबावचसा चान्ते प्राञ्जलिः प्राह भाषणम् ।

'गच्छामो नो वयं ग्रामं गृह्यतां मम वन्दनम् ।।'[73]

एवं वीरः स्थितप्रज्ञो मर्त्यं देहं जहौ ततः ।

श्रद्धाञ्जलिष्वगीयन्त तद्गुणाः साधु सर्वतः ।।[74]

वस्तुतः वीर विनायक सावरकर ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत की स्वतन्त्रता, हिन्दू जाति, हिन्दू धर्म और हिन्दू राष्ट्र के लिए ही समर्पित कर दिया। उन्होंने असहनीय यातनाएँ भी हँसकर सहन की काँटों भरे रास्ते पर चले और अनेकानेक विपत्तियों की अग्नि में जलते रहे, परन्तु उनके जीवन द्वीप की ज्योति कभी धूमिल नहीं हुई। उनके जीवन का द्वीप यातनाओं में भी जलता ही रहा। वीर सावरकर प्रथम इतिहास लेखक थे, जिन्होंने अपनी पुस्तक '1857 का भारतीय स्वातंत्र्य समर' के माध्यम से जनता को वास्तविक तथ्यों की जानकारी करवाई। वस्तुतः वीर सावरकर एक वीर पुरुष, राष्ट्रीय नायक, एक महान् व्यक्ति, देशभक्त, शौर्य एवं हिन्दू राष्ट्र के प्रति अनन्य भक्त थे तथा स्वतन्त्रता के लिए लम्बी लड़ाई लड़ने वाले एक 'अभितीर्थ', राष्ट्रवाद, वीरता और सामाजिक एकता के अद्भुत प्रतीक, देश के स्वतन्त्रता संग्राम के एक निष्ठावान् और लगनशील यौद्धा थे। कवि केदार ने उनकी औरता का उद्घोष अपनी कृति में इस प्रकार किया है-

प्रपात इव वक्तृत्वं विद्युत्तुल्या च चेतना ।

वायुवत्तस्य सञ्चारः सिन्धुवच्चावधारणा ।।[75]

महाद्रष्टा महावक्ता महाविद्वान् महाकविः ।

स्वातन्त्र्यस्ये महायज्ञे जुहाव स्वायुषो हविः ।।[76]

राजनीतौ स चाणक्यो बिर्बलो वादलाघवे ।

शिवाजी च रणव्यूहे प्रतापश्च पराभवे ।।[77]

युयुत्सुः शीखवन्नेता दृष्टा वैदिकवद् यती ।

बौद्धवत्समतानिष्ठौ जैनवत्मरणव्रती ।।[78]

कृष्णवत्तस्य चातुर्यं बुद्धतुल्या विरक्तता ।

पैगम्बरोपमं शौर्यं ख्रिस्तवच्च सहिष्णुता ।।[79]

कुटिलानां महाशत्रुर्दलितानां सखा प्रियः ।

समतायाः पुरस्कर्ता हिन्दुत्वस्य हिमालयः ।।[80]

अन्ये फलानि सेवन्ते कर्मणां कर्मयोगिनः ।

कर्मण्येव चिदानन्दः सदा तस्य महात्मनः ।।[81]

स तृप्तो निजसंसारे कृतार्थो देशकारणे ।

दीपस्तम्भो हि राष्ट्रस्य नमस्तस्मै महात्मने ।।[82]

इस प्रकार वीरता वीर सावकर का सम्पूर्ण जीवन ही साहसपूर्ण कृत्यों का एक महाकाव्य है ।

REFERENCES

1. 1/108

2. 1/109

3. 2/75

4. 2/76

5. 2/77
6. 3/10
7. 3/12
8. 3/45
9. 3/106
10. 3/107
11. 3/110
12. 3/111
13. 3/158
14. 3/160
15. 3/161
16. 3/166
17. 4/1
18. 4/3
19. 4/26
20. 4/27
21. 4/32
22. 4/46
23. 4/47
24. 4/48
25. 4/49
26. 4/50
27. 4/75
28. 4/77
29. 4/84
30. 4/86
31. 4/138
32. 5/5
33. 5/6
34. 5/15
35. 5/102
36. 5/106
37. 5/107
38. 5/19
39. 5/24
40. 5/25
41. 5/26
42. 6/1
43. 6/2
44. 6/3
45. 6/18
46. 6/141
47. 6/143
48. 6/156
49. 6/44
50. 6/45
51. 6/169
52. 7/24
53. 7/25
54. 7/29
55. 7/38
56. 7/39
57. 7/40
58. 7/78
59. 7/79
60. 8/44
61. 8/48
62. 8/111
63. 8/112
64. 8/113
65. 8/124
66. 8/125
67. 8/142
68. 8/143
69. 8/146
70. 8/170
71. 8/172
72. 8/191
73. 8/195
74. 8/196

75. 8/202

76. 8/203

77. 8/204

78. 8/205

79. 8/206

80. 8/207

81. 8/208

82. 8/209